International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 2; March 2016; Page No. 14-16

बीसवीं षताब्दी में सामाजिक परिवर्तन से हिन्दी उपन्यासों में विकसित प्रमुख मनोविष्लेषण प्रवृत्ति

Dr. Aradhana Kaurav

Research Scholar, School of Language, Devi Ahilya University, Indore, Madhya Pradesh, India.

प्रस्तावना

उपन्यास का सम्बन्ध जीवन से है। उपन्यास जीवन की व्याख्या है इसके बिना वह मृत है। इस संसार में मनुष्य जो कुछ भी देखता, सुनता और करता है, इसी आँखों–देखें एवं कानों–सुने संसार को उपन्यासकार उपन्यास का विषय बनाता है। मनुष्य का जीवन समाज और विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों से घिरा होता है। समाज आचार–विचार, धर्म–नीति, चिन्तन, रीति–रिवाज और भाषा की एक पूरी परम्परा धारण किए होता है। समाज और परिस्थितियाँ मनुष्य की मनोभूमि का निरन्तर निर्माण करती चलती हैं।

मनुष्य के अंदर, निरंतर बढ़ता असंतोष, नैराष्य व अजनबीपन, स्वकेन्द्रीकरण, मानवसुलभ स्वप्नों और इच्छाओं की आंषिक पूर्ति और उनके अधिकांषतः खंडित हो जाने की स्थिति जैसे कहीं व्यक्तियों को भी खंडित करती है तभी तो मोहभंग और आस्था का विघटन, यौन कुंठाएँ, विकार ग्रस्तता और आतंक से प्रेरित गतिविधियाँ आदि खंडित व्यक्तियों की उपज के रूप में सामने आते हैं। इन्हीं सामाजिक परिवर्तनों के कारण मनोविष्लेषण की प्रवृत्ति विकसित हुई। मानवीय पीड़ा की कलात्मक अभिव्यक्ति मनोविष्लेषणात्मक उपन्यासों के पिटारे में से झाँकती है– जैनेन्द्र कुमार के ''परख'', ''सुनीता'', ''त्यागपत्र'', ''सुखदा'', ''कल्याणी'', ''विवर्त'', ''व्यतीत'', ''जयवर्धन'', ''अनाम स्वामी'', प्रेमचन्द का ''गबन'', अज्ञेय के ''शेखरः एक जीवनी'', ''नदी के द्वीप'', ''अपने–अपने अजनबी'', इलाचन्द्र जोषी के ''जहाज का पंछी'', ''सन्यासी'', ''पर्दे की रानी'', ''प्रेत और छाया'', ''निर्वासित'', ''लज्जा'', ''मुक्तिपथ'', ''सुबह के भूले'', डॉ. देवराज के ''पथ की खोज'', ''अजय की ड़ायरी'', ''रोड़े और पत्थर'', ''भीतर का घाव'', मन्नू भड़ांरी का ''आपका बंटी'', नरेष मेहता का ''धूमकेतुः एक श्रुति'', महेन्द्र भल्ला का ''एक पति के नोट्स'', राजकमल चौधरी का ''मछली मरी हुई'', श्रीकांत वर्मा का ''दूसरी बार'', मोहन राकेष का ''अंधेरे बन्द कमरे'', निर्मल वर्मा का ''डार्करूम'', धर्मवीर भारती का ''गुनाहों का देवता'', द्वारिका प्रसाद का ''घेरे के बाहर'', वीरेन्द्र सक्सेना का ''त्रयी'', दीप्ति खण्ड़ेलवाल का ''कोहरे', कमलकुमार का ''आवर्तन'', मंजुल भगत का ''अनारो'', मेहरून्निसा परवेज का ''उसका घर'', मनोहरष्याम जोषी का ''कुरु–कुरु स्वाहा'', षिवप्रसाद सिंह का ''औरत'', निरूपमा सेवती का ''पतझड़ की आवाज'', कृ ष्णबलदेव के ''नर–नारी'', ''मायालोक'', जया जादवानी का ''तत्वमसि'', आदि में मानव मन की कलात्मक अभिव्यक्ति मिलती है।

मनोविष्लेषण के प्रर्वतक फ्रायड माने जाते है। फ्रायड के अनुसार ''मनुष्य के वास्तविक कर्म तर्क से नहीं प्रवृत्ति और आवेग से संचालित होते है। मस्तिष्क स्पन्दनों, विचारों, बोध, ज्ञान और तार्किक क्रमों या कुछ निष्चित आध्यात्मिक सारों का समुच्चय नहीं है, बल्कि वह एक गहरा उर्मिल सिन्धु है जिसके रहस्यमय तत्व उसके चेतन स्तर या तर्क में उपलब्ध नहीं होते, बल्कि अचेतन और प्रवृत्तियों की गहराई में ही प्राप्त होते है।'' [1]

''मनोवैज्ञानिक उपन्यास कहने का तात्पर्य उन उपन्यासों से है जो मूलतः मनोविष्लेषण पर आधारित है। मनोविज्ञान साहित्य के लिए नई वस्तु नहीं है। वह आदिकवि वाल्मीकी से लेकर आज तक के सभी कवियों और साहित्यकारों की कृतियों में लक्षित होता है।'' [2]

डॉ. सुषमा धवन मनोविष्लेषण के बारे में कहती हैं– ''मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति आधुनिक युग चेतना की देन है और उसे साकार अभिव्यक्ति देने के लिए उपन्यास का नवीन रूप अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है।'' [3]

जैनेन्द्र हिन्दी के प्रथम मनोविष्लेषण प्रवृत्ति के उपन्यासकार माने जाते है। ''परख'', ''सुनीता'', ''त्यागपत्र'', ''सुखदा'', ''कल्याणी'', ''विवर्त'', ''व्यतीत'', ''जयवर्धन'', ''अनाम स्वामी'', आदि में मनोविष्लेषण षिल्प द्वारा मनुष्य की वास्तविक स्थिति स्पष्ट की गई है। जिसमें अपने बहुचर्चित उपन्यास ''त्यागपत्र'' में नायिका मृणाल के मानसिक घात–प्रतिघातों का जैनेन्द्र ने मनोवैज्ञानिक विष्लेषण किया है। मृणाल की मानसिक जटिलताओं के परिस्थापन में सहयोग देने वाली जीवन की उन घटनाओं का भी चित्रण किया गया है, जो मानसिक ग्रंथियों का निर्माण करती है। जब मृणाल अपने पूर्व प्रेम की चर्चा अपने पति से करती है, तब पति चरित्रहीन कहकर उसे घर से निकाल देता है। वह जीवन की वास्तविक घटना को पति से कह बैठती है। सच्चाई को स्वीकारने के कारण उसे पतित्याग का दंड़ मिलता है, फलस्वरूप उसका मन कुंठाग्रस्त होकर जीवन अमंगल का आकांक्षी बन जाता है।

इलाचन्द्र जोषी भी मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार है। ''इलाचन्द्र पर फ्रायड, एड़लर और जुंग तीनों का प्रभाव है, किन्तु वे अपनी सामाजिक आस्थाओं के कारण सामूहिक अवचेतनवाद के निकट है। मार्क्सवाद और मनोविष्लेषण दोनों में यथार्थवाद को अलग–अलग आयामों में उद्घाटित किया है।'' [4] ''जोषी के ''सन्यासी'' ''पर्दे की रानी'' ''प्रेत और छाया'' ''निर्वासित'' ''जिप्सी'' ''जहाज का पंछी'' आदि उपन्यासों में मनोग्रंथियों की प्रधानता है। मानवीय कुन्ठाओं का चित्रण है।

हिन्दी में मनोविष्लेषण उपन्यास को प्रौढ़ रूप देने का श्रेय अज्ञेय को है। ''अज्ञेय ने फ्रायड के मुक्त–आसंग पद्धति का प्रयोग ''शेखरः एक जीवनी'' में किया है। मृत्यु के मुक्त–आसंग में शेखर की मनोग्रन्थियों का विष्लेषण किया गया है। जिससे प्रभावित होकर शेखर के जीवन की नग्नता को इसी मनोवैज्ञानिक सत्यता के रूप में ग्रहण करना होगा।'' [5]

फ्रायड के अनुसार हमारी अभिलाषाएँ सामाजिक भय के कारण दमित होकर अचेतन में चली जाती है। ''मन के कोने में दबी स्मृतियाँ जिस तरह सम्मोहन की अवस्था में या चित्त–विष्लेषक की सूचनाओं के द्वारा अथवा किसी विषेष अवसर पर मुक्त–आसंग पद्धति के सहारे चेतन में लायी जाती है उसी तरह मृत्यु की सम्मोहिनी शक्ति ने शेखर के अतीत जीवन को विषेषतः स्मृतियों को उभार कर सामने रख दिया है।'' [6]

अज्ञेय के ''अपने–अपने अजनबी'' में मनोविज्ञान और अस्तित्ववाद का समन्वय है। मनोविष्लेषण उपन्यास की श्रृंखला में डॉ. देवराज का ''अजय की ड़ायरी'' भी उल्लेखनीय है, जो ड़ायरी के माध्यम से लिखा मनौवेज्ञानिक उपन्यास है। प्रेमचन्द का ''गबन'' मनोवैज्ञानिक छवि से भरपूर है। प्रेमचन्द ने रामनाथ जैसे सामान्य पात्र को लेकर अर्न्तद्वंद्व का मार्मिक चित्रण किया है। राजेन्द्र यादव के प्रायः सभी उपन्यासों में पात्रों की मनःस्थितियों का विष्लेषण किया गया है।

लेकिन मध्यवर्गीय समस्याओं के उभर जाने के कारण पात्रों का मनोविष्लेषण गौण पड़ गया है। उनके ''कुलटा'' में स्त्री–पुरूष पात्रों की विपरीत एवं रूचिवैभिन्न मनःस्थितियों का सफल विष्लेषण किया गया है।

नरेष मेहता के ''डूबते मस्तूल'', ''धूमकेतुः एक श्रुति'', ''नदी यषस्वी है'', आदि में मनःस्थिति का विष्लेषण है। ''डूबते मस्तूल'' में नायिका रंजना के कुठांग्रस्त व्यक्तित्व का चित्रण है। व्यक्तित्व निर्माण में भय, वासना और अंह की प्रधानता होती है। भय के कारण बच्चों में हीनग्रन्थि का जन्म होता है जिसके कारण वे अन्तर्मुखी हो जाते है। ''धूमकेतुः एक श्रुति'' का उदयन भी भय का षिकार हो गया है। वह अपनी दीदी शांति के कहने पर लकड़ी लेने जाता है वह बिल्ली देखकर डर जाता है। तब वह कहता है कि– ''दीदी मुझे लकड़ियाँ ले आने के लिए भेजती है। में सिहर उठता हूँ। मुझे बिल्ली की चमकती हरी आँखें उसे अंधेरे में बड़ी ड़रावनी लगती हैं।'' [7]

''रूकोगी नहीं राधिका'' उषा प्रियंवदा का मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। यह एक युवती की कहानी है। इसमें आधुनिक पष्चिमी संस्कारों और परम्परागत नारी मूल्यों के बीच संघर्ष और कुंठाओं का उल्लेख है। कमलेष्वर के ''ड़ाक बंगला'' में नायक तिलक और नायिका इरा के मनोभावों और उनकी कुंठाओं का विष्लेषण है। मन्नू भण्ड़ारी के ''आपका बंटी'' में तलाक व दूसरे विवाह के बीच झूलते हुए बालमन का अंतरंग विष्लेषण है तथा शकुन और अजय के विवाहित जीवन की छठपटाहट है। शकुन सोचती है– ''गत दस वर्ष का विवाहित जीवन, एक अंधेरी सुरंग में चलते जाने की अनुभूति से भिन्न नहीं था।'' [8] शकुन अजय को हरा नहीं पाती और यही चुभन उसे उठते–बैठते कुंठित करती है।

मोहन राकेष ने ''अंधेरे बन्द कमरे'' उपन्यास की भूमिका में लिखा है– ''और जहाँ तक परिचय का सवाल है मैं सोचकर भी तय नहीं कर पा रहा हूँ? आज की दिल्ली का रेखाचित्र, पत्रकार मधुसूदन की आत्मकथा? हरिबंस और नीलिमा के अर्न्तद्वंद्व की आत्मकहानी?'' [9] यह उपन्यास एक और हरिबंस और नीलिमा के मानसिक द्वंद्व का चित्रण करता है तो दूसरी ओर दिल्ली के जीवन में परिव्याप्त कुरीतियों का चित्रण भी करता है।

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में पात्रों के भावनात्मक सम्बन्धों की अभिव्यक्ति की गई है। लेखिका ने ''सूरजमुखी अँधेरे के'' में मनोवैज्ञानिक युक्त आंसगप्रणाली का प्रयोग किया गया है। व्यक्ति की अतृप्त वासनाओं और इच्छाओं को प्रकाष में लाया गया है। इसके सहारे मनोविष्लेष्य रोगी के अनाप–षनाप शब्दों का भी अनुकूल वातावरण में उपचार प्रस्तुत किया जाता है। जैसे– जैनेन्द्र के ''सुनीता'', इलाचन्द्र जोषी के ''निर्वासित'', राजेन्द्र यादव के ''अनदेखे अनजाने पुल'' में किया हैं।

जया जादवानी के ''तत्वमसि'' में मनोविष्लेषण के दर्षन होते है। नायिका मानसी बचपन से ही अपने आपको अलग सा महसूस करती है और कल्पना के संसार में खोई रहती है। योगेष के ''छविनाथ'' में छविनाथ की कुठाओं का विष्लेषण है। रजनी पानिकर के ''मोम के मोती'' में माया के जीवन में उसके सब स्वप्न टूट जाते है और वह लोगों की नजर में केवल रखैल बन जाती है इस से उसके मन में मानसिक ग्रन्थियों का निर्माण हो जाता है। लेखिका ने इन ग्रंथियों का कुषलता से विष्लेषण किया है। कान्ता सिंह का ''अतृप्ता'' में पात्रों के मनोभावों का चित्रण किया गया है।

मंजूर एहतेषाम का ''सूखा बरगद'' में शहर का पहला दंगा बच्चों व किषोरावस्था के लोगों पर मनोवैज्ञानिक रूप से अपना प्रभाव ड़ालता है। हिम्मत और विष्वास के स्थान पर उनके मन में भय और खतरे का अहसास पलने लगता है। उपन्यास में रषीद इसी भय से आतंकित होती है और दंगे की घटना को कभी भूल नहीं पाती। सुहैल शी इसी असुरक्षा के भाव से ग्रस्त होता है और धीरे–धीरे हीनता की ग्रन्थि इसमें घर करती चली जाती है। नासिरा शर्मा के ''जिन्दा मुहावरें'' में लेखिका ने पात्रों के मन की गुत्थियों के एक–एक तारों को खोलकर रख दिया है। इसके साथ ही उन्होंने कहीं स्वप्न और कहीं दिवास्वप्न के माध्यम से मनःस्थिति को चित्रित किया है।

अमरकान्त के ''कटीली राह के फूल'' में नायक अनूप की हीन भावना और उसकी प्रेरक–स्थितियों का विष्लेषण है। अनूप में आत्मविष्वास की कमी है वह अपने साथ पढ़ने वाली कामिनी की ओर आकर्षित हो जाता है। पर हीन भावना के कारण उसे लगता है कि कामिनी उससे घृणा करती है– ''मैं भीतर ही भीतर कामिनी से प्यार करता था। इस अस्वीकृति का कारण यह विष्वास था कि कामिनी मुझको प्यार नहीं कर सकती, क्योंकि मुझमें कोई खूबी नहीं जो लड़की लेखकों और कवियों की इतनी आलोचना कर सकती है वह मुझको क्या समझ रही होगी?'' [10]

भीष्म साहनी के ''कुतों'' और ''नीलू नीलिमा नीलोफ़र'' में नारी मनोविज्ञान और नारी नियति का चित्रण है। कमलेश्वर के ''कितने पाकिस्तान'' में इतिहास और फैंटेसी के मिश्रण से निर्मित कथासंसार का अंकन है। इस कथासंसार में भी वर्तमान शामिल है पर वह अतीत और फंतासी से आक्रांत है। मनोविष्लेषण उपन्यास की श्रृखंला में कृष्णा अग्निहोत्री का ''बात एक औरत की'' बहुचर्चित है। इसके सम्बन्ध में डॉ. विवेकीराय ने कहा है– ''हिन्दी उपन्यासों में पहला आत्म कथात्मक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है, जिसमें एक ऐसी नारी की मानसिकता का चित्रण है जो दोहरी मानसिकता के बीच अपने जटिल अंर्तद्वंद्व के साथ जी रही है। लेखिका ने नायिका की बचपन की घटनाओं को भी सूक्ष्म दृष्टि से परखा है। सात साल की बच्ची अपने आसपास के परिवेष में क्या–क्या अनुभव करती है उसका यथार्थ चित्रण सषक्त व सरल बन पड़ा है। यहाँ तक कि अपने आस–पास उसके हमउम्र बच्चों के साथ किये गये व्यवहार की प्रतिक्रिया भी सूक्ष्म अवलोकन द्वारा प्रस्तुत की गई है।'' [11]

विष्णु प्रभाकर के ''अर्द्धनारीष्वर'' में बलात्कार की समस्या का उल्लेख है। केन्द्रीय पात्र सुमिता, विभा, वर्तिका, राजकली, श्यामला आदि के माध्यम से बलात्कार–ग्रस्त स्त्री की सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और नैतिक समस्याओं तथा स्त्री–पुरूष सम्बन्धों की जटिलता का चित्रण है। सूर्यबाला के ''मेरे संधिपत्र'' का आधार मनोवैज्ञानिक है। इसमें नारी मन के आंतरिक रहस्यों, भावनाओं, कामनाओं आदि का चित्रण है।

मृदुला गर्ग के ''उसके हिस्से की धूप'' में मनीषा के व्यक्तित्व का पूरी तरह से विष्लेषण है। उसके अर्न्तद्वंद्व अन्तर्निहित संकल्पों, विकल्पों, विचारधाराओं का सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विष्लेषण पूरी संवेदना के साथ किया गया है। उन्होंने ''कठगुलाब'' में नारी जाति की युगों तक फैली पूर्व–पष्चिम मे उसांसे भरती वेदना को मनोविष्लेषण चिन्तन की दृष्टि से स्पष्ट किया है।

कृष्णबलदेव के ''नर–नारी'' और ''मायालोक'' में मनोविज्ञान के दर्षन होते है। ''नर–नारी'' में कुछ पात्रों की अलग–अलग खुद से ही आन्तरिक बातचीत होती है। ये पात्र अपने अचेतन में खोए रहते है। ''मायालोक'' का केन्द्रीय पात्र 'मैं' एक पढ़ा लिखा अनाथ बूढ़ा है– ''जिसके मष्तिस्क में सारी दुनिया की स्मृतियाँ भरी पड़ी है। अँधेरा, डर, ऊब, असुरक्षा, भटकन, आदि उसकी चेतना के अभिन्न अंग है।'' [12] उपन्यास का नायक 'मैं' स्वप्नों के मायालोक में भटकता रहता है। वीरेन्द्र सक्सेना के ''त्रयी'' में काम–संबंधों का मनोवैज्ञानिक यथार्थ, समय और स्थान के आयामों में बदलते रूपों का चित्रण है। दीप्ति खण्ड़ेलवाल के ''कोहरे'' में मार्ड़न सोसायटी की विसंगतियों के साथ नायिका के अंर्तद्वंद्व का विष्लेषण है।

कमलकुमार के ''आवर्तन'' में कॉलेज परिसर की पृष्ठभूमि में दाम्पत्य और दांपत्येत्तर संबधों के द्वंद्व विष्लेषण है। मंजुल भगत के ''अनारो'' में कामगीर महिला की मनःस्थिति का उल्लेख किया गया है। मेहरूनिसा परवेज के ''उसका घर'' की नायिका ऐनी अपने

सम्पूर्ण जीवन में संघर्ष से जूझती है। पति द्वारा तिरस्कृत होकर वह अपने भाई–भाभी के साथ रहने पर अपने अंतरमन की वेदना और घुटन से छटपटाती है। सोचती है– ''यह तो दिल के संबंध होते है, पत्नी को भीख में माँगा हुआ अधिकार कभी सुखी नहीं करता। जब उसके मन से ही उतर गयी, तो जबरदस्ती करके वह अधिकार या सम्मान पाया तो जायेगा नहीं। [13]

मनोहरष्याम जोषी के उपन्यास ''कुरू–कुरू स्वाहा'' में महानगर परिवेष में मध्यवर्गीय जीवन की अर्न्तदषाओं का विष्लेषण है। षिवप्रसाद सिंह के ''औरत'' में शोषित नारी की विवषता का पता सोनवा के इस कथन से चलता है– ''मैं बेबस थी। उसके लठैतों ने हाथ–पैर बाँध दिये थे। मैंने बहुत कोषिष की। चिल्लाई। सोबरन ने खुद मेरे मुहँ में अपना गमछा ठूँस दिया। मेरा शरीर पसीने–पसीने हो रहा था पर मैं अकेली औरत क्या कर सकती थी। मेरा देव ही रूठा है। न चाहते हुए शी एक पापी का गर्भ यदि मेरे पेट में आ गया तो मैं क्या कर सकती थी।'' [14] यहाँ षोषित स्त्री की मनोदषा और दैहिक षोषण के दौरान जिस मानसिक पीड़ा से गुजरना होता है वह अकथनीय है, क्योंकि उस पीड़ा में स्त्री के भावी जीवन को पीस ड़ालने वाली मुसीबतों का विषैला दंष भी विद्यमान होता है।

निरूपमा सेवती के ''पतझड़ की आवाज'' में नारियों के मानसिक द्वंद्व का चित्रण किया गया है। इसी प्रकार ''मेरा नरक अपना है'' में भी मंजू, अनीता, सुनन्दा अपने पतियों के रूखे व्यवहार से जटिल व विषम स्थितियों के अन्तद्वंद्व में टूटती है। इस उपन्यास में उन्होनें ऐसे पुरूष का मानसिक विष्लेषण किया है जो न तो पत्नी का रह जाता है न प्रेयसी का बन पाता है। प्रभाखेतान के ''अपने अपने चेहरे'' में रमा 'दूसरी औरत' होने की पीड़ा से हारती टूटती है। रमा के इस अंर्तद्वंद्व और आत्ममंथन का विष्लेषण किया है। स्त्री के लिए किसी पुरूष का दोस्त होना परम्परागत भारतीय समाज को स्वीकार नहीं है। यदि उसे समाज में स्वीकृति पानी है तो उसका 'पत्नी' होना अनिवार्य है। दोस्त के रूप में 'दूसरी औरत' होती है। 'पहली औरत' वह है जिसकी माँग में सिंदूर होता है उसे पत्नी होने का सम्मान और बल प्राप्त है। 'दूसरी औरत' इस सम्मान और बल से वंचित होती है।

अतः बीसवीं शताब्दी में मनोविष्लेषण ने मनुष्य के भीतर मन को झकझोर कर रख दिया है। वह अपनी जटिल संवेदनाओं के बीच अपने भीतर के संघर्ष से गुजरता है। इन उपन्यासों में गहराई और सूक्ष्मता है, घटनाओं की बजाय पात्रों की मनःस्थितियों को व्यापक रूप से चित्रित किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. रामदरश मिश्र– हिन्दी उपन्यासः एक अर्न्तयात्रा– पृष्ठ 83.
2. रामदरश मिश्र– हिन्दी उपन्यासः एक अर्न्तयात्रा– पृष्ठ 82.
3. डॉ. सुषमा धवन– हिन्दी उपन्यास– पृष्ठ 165.
4. डॉ. राजेन्द्र मिश्र एवं प्रहलाद तिवारी– बीसवीं शताब्दी के चर्चित उपन्यास– पृष्ठ 13–14.
5. डॉ. रामविनोद सिंह– हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में नारी चरित्र– पृष्ठ 72.
6. डॉ. देवराज उपाध्याय– आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान– पृष्ठ 246.
7. नरेश मेहता– धूमकेतुः एक श्रुति– पृष्ठ 7.
8. मन्नू भण्डारी– आपका बंटी– पृष्ठ 39.
9. मोहन राकेष– अंधेरे बंद कमरे– भूमिका.
10. अमरकान्त– कटीली राह के फूल– पृष्ठ 41.
11. डॉ. विवेकीराय– प्रकर– पृष्ठ 26.
12. साहित्यमाला– भारतीय उपन्यासः अंतिम दषक पृष्ठ 244.
13. मेहरून्निसा परवेज़– उसका घर– पृष्ठ 5.
14. षिवप्रसाद सिंह– औरत– पृष्ठ 26.